ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

त्वमस्माकं तव स्मसि। ऋग्वेद 8/92/32
हे प्रभो! तू हमारा है और हम तेरे हैं।
O God! You are our all in all & we are your divine children, you are ours and we are yours.

वर्ष 36, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 सितम्बर, 2013 से रविवार 15 सितम्बर, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 10
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की

विशेष गोष्ठी एवं अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न : ऐतिहासिक बैठक में हुए कई ऐतिहासिक निर्णय

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में समस्त आर्यजनों द्वारा स्वीकृत विराट एवं बहु प्रतीक्षित

आर्यसमाज का अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र बनाने का प्रस्ताव पारित

पूर्ण प्रस्ताव तैयार करने के लिए समिति का गठन

आर्यसमाज के विस्तार के लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा : आचार्य बलदेव

वर्तमान चुनौतियों से निबटने में कारगर साबित होगा यह केन्द्र : महाशय धर्मपाल

देश विदेश के आर्यों की आशाओं को पूर्ण करने का केन्द्र होगा यह संस्थान

समस्त प्रतिनिधियों ने इसे बताया ऐतिहासिक प्रस्ताव

आर्यसमाज की दीर्घकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, आर्य समाज के उपयोग में आने वाले मानव संसाधन को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ आर्य समाज से सम्बन्ध रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की प्रचार सम्बन्धी, संगठन सम्बन्धी, रिकार्ड सम्बन्धी समस्त आवश्यकताओं को एक ही स्थान पर परिपूर्ण करने हेतु बहु-विचारित योजना अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 में लाखों की संख्या में आर्यजनों के बीच में प्रस्तावित बहुउद्देशीय केन्द्र की स्थापना करने का संकल्प सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ऐतिहासिक गुरुकुल कांगडी में सम्पन्न बैठक में एक प्रस्ताव द्वारा स्वीकृत किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की दो दिन चली विचार गोष्ठी एवं अन्तरंग बैठक सभा में इसके सम्बन्ध में व्यापक चर्चा हुई। सभी सदस्यों ने इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में अपने-अपने सुझाव एवं विचार रखे। मूल प्रस्ताव जोकि सार्वदेशिक सभा द्वारा पूर्व बनाई गई एक समिति द्वारा प्रस्तुत किया गया था। जिसकी दो दिन की बैठक इसी सम्बन्ध में इन्दौर में सम्पन्न हुई थी, के

- शेष पृष्ठ 6 पर

सार्वदेशिक सभा का निर्णय : उत्तराखण्ड त्रासदी प्रभावित क्षेत्र गुप्तकाशी में असहाय बच्चों के लिए

आर्यसमाज बनाएगा छात्रावास एवं विद्यालय

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं सार्वदेशिक सभा की संयुक्त समिति का गठन

आरम्भ एक करोड का करेंगे प्रावधान : आर्यसमाजों से सहयोग की अपील

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में सर्व-सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि उतराखंड आपदा पीड़ित क्षेत्र में आर्य समाज की ओर से गरीब, असहाय एवं अनाथ बच्चों के लिये एक छात्रावास स्थापित किया जाये जिसमें उन बच्चों के भोजन और आवास की व्यवस्था की जाये। साथ ही उनके पढ़ने के लिये विद्यालय की भी स्थापना की जाये। सभा में उपस्थित उत्तराखंड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हजारीलाल अग्रवाल जी, छाया प्रधान श्री देवराज आर्य जी, वरिष्ठ उप प्रधान डा. विनय विद्यालंकार जी ने संयुक्त रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा लिये गये इस निर्णय का अपनी सभा की ओर से स्वागत किया तथा इसे राहत कार्यों में आर्य समाज की ओर से उठाया गया एक विशिष्ट कदम बतलाया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने समस्त देश-विदेश की आर्य समाजों को आह्वान किया कि इस आपदा पीड़ित क्षेत्र में खुलने वाले विद्यालय और छात्रावास के लिये भरपूर मात्रा में सहयोग प्रदान करें।

दिल्ली सभा के प्रधान श्री ब्र. राजसिंह आर्य जी, वरिष्ठ उप प्रधान श्री

- शेष पृष्ठ 6 पर

आर्यनेता पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी का निधन : आर्य जगत में गहन शोक

निराश्रितों के आश्रयदाता के रूप में जन-जन में लोकप्रिय

आर्य अनाथालय दरियागंज एवं उससे सम्बन्धित संस्थाओं के कर्णधार

आर्यजगत की अपूर्णीय क्षति
- आचार्य बलदेव, प्रधान, सार्व. सभा

विश्व की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सार्वदेशिक न्याय सभा के अध्यक्ष पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी जी का गुरुवार 5 सितम्बर, 2013 को देहावसान हो गया। वे लगभग 75 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार 7 सितम्बर, 2013 को मध्याह्न 3 बजे निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। इस अवसर पर अनेक राजनैतिक-सामाजिक संस्थाओं के अधिकारी, वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवाणी, अरुण जेटली, डॉ. रमाकान्त गोस्वामी, डॉ. अशोक वालिया, स्वामी रामदेव, ब्र. राजसिंह आर्य, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य एवं विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी, अध्यापक एवं दिल्ली व आस-पास की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी एवं सदस्यों ने अश्रुपूरित नेत्रों से उन्हें विदाई दी।

वर्ष 1938 श्री देशराज चौधरी जी के यहां जन्में श्री वीरेश प्रताप जी महर्षि दयानन्द जी की युगान्तरकारी विचारधारा पैतृक विरासत के रूप में प्राप्त हुई। कालान्तर में वे आर्यसमाज की अनेक संस्थाओं के सिरमौर बने उनमें से विशेष रूप से स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय, चन्द्रवती चौधरी स्मारक

- शेष पृष्ठ 7 पर

वेद-स्वाध्याय

हे आत्मन् मृत्यु से भयभीत मत हो

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामोऽरंकृत्या तमसि क्षेष्यग्ने। सुगान्पथः कृणुहि देवयानान्वह हव्यानि सुमनस्यमानः।। ऋग्वेद 10/51/5

अर्थ—(अग्ने) हे आत्मन्! **(तमसि क्षेषि)** तू अज्ञानान्धकार में निवास करता है, इस कारण मृत्यु से भयभीत हो रहा है। **(मनुः)** मननशील, **(देवयुः)** दिव्य गुणों की कामना वाला होकर **(यज्ञकामः)** अध्यात्म यज्ञ की कामना करता हुआ **(अरङ्कृत्य)** अपने को सुसज्जित कर **(एहि)** आओ **(देवयानान् पथः)** देवयान के मार्ग को **(सुगान् कृणुहि)** सरलता से जिस पर चल सकें ऐसा, सुखप्रद बनाओ। **(सुमनस्यमानः)** और प्रसन्नचित्त हो **(हव्यानि वह)** परमात्मा के प्रति स्तुति, प्रार्थना, उपासना को प्रेरित करो।

मृत्यु से भयभीत जन को प्रभु आश्वासन देते हुये कह रहे हैं—हे (अग्ने) आत्मन्! तू **तमसि क्षेषि** अज्ञान अन्धकार में निवास करने के कारण भयभीत हो रहा है। अन्धकार में ही भय लगता है क्योंकि मार्ग दिखाई नहीं देता। कहीं पर हिंसक प्राणी—सिंह, वृक, सर्प और कही पर गड्ढे, पानी, कण्टक, दीवार आदि पग-पग पर बाधक बन प्राणों को संकट में डाल देते हैं। तमोगुण के कारण तेरी बुद्धि पर अज्ञान का परदा छा गया है जिसके कारण तू किं कर्त्तव्यविमूढ हो भयभीत हो रहा है। जिस मार्ग पर तू चल रहा है वह पितृयाण या **जायस्व-म्रियस्व** अर्थात् जन्म-मृत्यु वाला होने से तुझे भयदायक प्रतीत हो रहा है।

इस मार्ग से सुरक्षित बच निकलने का एक ही उपाय है। तू इस पथ को छोड़कर देवयान का पथिक बन **सुगान् पथः कृणुहि देवयानान्** जिस पथ से विद्वान् जाते हैं वही पथ सुगम है, जिसमें अन्धकार, भय या विघ्न-बाधायें नहीं हैं और जो मुक्ति को प्राप्त कराने वाला है।

इस पथ का पथिक बनने के लिये तुझ में चार गुण होने चाहियें—

१. मनुः मन अवबोधने से मनु या मनुष्य शब्द की निष्पत्ति होती है। वेद कहता है—**मनुर्भव** अर्थात् सोच समझ कर कार्य करने वाला और ज्ञानयुक्त बन। मनुष्य और पशु में यही तो अन्तर है कि जो अच्छा-बुरा विचार कर भद्र, सुखकारक का ग्रहण और दुरित, दुर्गुण, दुर्व्यसनों का परित्याग करे वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। जो अपने स्वार्थ में प्रवृत्त हो या पशु जैसे रस्सी से बंधा होता है वैसे ही जो इन्द्रियों का दास है वह पशु सदृश ही जानना चाहिये। मनुष्य को बुद्धि दी गई है इसलिये उसे यह चिन्तन करना चाहिये कि मैं इस संसार में किसलिये आया हूँ। मेरे साथ अन्त में क्या जाने वाला है। मैं जो कार्य कर रहा हूँ वह मुझे क्या आत्मकल्याण की ओर ले जायेगा अथवा जन्म-मरण के बन्धन में डालेगा। इस प्रकार चिन्तन करने और असत् का त्याग और सत्य का ग्रहण करने से ही तत्त्वज्ञान की प्राप्ति होगी।

२. देवयुः—तू दिव्य गुणों की कामना वाला हो। अपना पेट तो पशु भी भरते हैं। तुझे ज्ञान-नेत्र दिये है जिनसे **आत्मवत् सर्वभूतेषु** अर्थात् सबको अपनी आत्मा के समान समझना कि जैसा सुख-दुःख मुझे होता है, वैसी ही दूसरों को भी सुख-दुःख की प्रतीति होती है। इस दर्शन से नेत्र दिव्यदर्शन वाले हो जाते हैं। ऐसे ही प्रभुभक्ति, कीर्तन का श्रवण, दूसरों की निन्दा न करना, न सुनना और अपने लिये हितकर उपदेश का श्रवण करने से कान पवित्र होते हैं। मुख से सत्य, मधुर, परोपकारक वचन, ईश्वर का गुणगान, विद्यादान से वाणी पवित्र होती है। हाथों से सेवा, दान और किसी की रक्षा करना और उत्तम कर्म करने हेतु दौड़ना, निर्बलों की रक्षा, धर्मकार्यों में गतिशील रहने से पैर पवित्र हो जाते हैं। हे मानव! तू सर्वप्रथम अपने मन, बुद्धि और इन्द्रियों को देवत्व से युक्त कर।

३. यज्ञकामः—निष्काम कर्मों का करना यज्ञ कहलाता है। जैसे घृत-सामग्री, समिधा द्वारा जनहित की भावना से यज्ञ किया जाता है और इदं न मम कह कर आहुति दी जाती है वैसे ही कर्त्तव्य भाव से निष्काम कर्मों को करने की कामना देवयान के पथिक को करनी चाहिये। परोपकारक, श्रेष्ठ कर्मों को करना ही यज्ञ है। भौतिक अग्नि में दी गई आहुतियाँ भी इसी भाव को प्रकट कर रही हैं।

४. अरंकृत्य—कहीं पर जाने के लिये जैसे वस्त्रादि से सुभूषित हो अन्य आवश्यक सामान को पहले ही सुसज्जित कर लिया जाता है वैसे ही देवयान के पथ पर चलने के लिये राग-द्वेष, काम-क्रोधादि को छोड़ सत्य, अहिंसा, संयम, सदाचारादि गुणों से अपने आपको सन्नद्ध करना होगा। इन चार गुणों को धारण कर तू **एहि** अर्थात् देवयान का पथिक बन।

सुगान् पथः कृणुहि—अब देवयान के पथ पर चलना तेरे लिये सुगम हो जायेगा। तप, श्रद्धा, शान्त स्वभाव और भिक्षा के समान शरीर को धारण करने के लिये खाना, न कि खाने के लिये जीना, ये गुण देवयान के पथिक में और होने चाहियें। यह मार्ग सूर्यद्वार अर्थात् मृत्यु के समय तुझे सहस्रार चक्र से इस शरीर से बाहर निकाल अमर पद मोक्ष को प्राप्त करायेगा इसमें सन्देह नहीं।

याद रखो, देवयान के मार्ग में श्रद्धा परम सहयोगिनी है। वह साधक की माता के समान रक्षा करती है। हे साधक! तू **वह हव्यानि सुमनस्य मानः** प्रसन्नचित्त हो श्रद्धापूर्वक उस ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करते रहना। जैसे भूखे व्यक्ति को भोजन के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे ही प्रभु भक्त को ये सांसारिक विषय बहुत ही हेय अर्थात् दुःख रूप ही प्रतीत होते हैं और वह इनसे विरक्त हो अभ्यास अर्थात् प्रभु के ध्यान में ही तल्लीन रहता है। उसकी समस्त क्रियायें ईश्वरार्पित हो जाती हैं। ईश्वर प्रणिधान से ईश्वर उस उपासक पर अनुकम्पा करता है। यह मार्ग ही देवयान की ओर जाने वाला है। **यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः** उस प्रभु का आश्रय ही मोक्ष और उससे पृथक् प्रकृति की उपासना करना, भोगों में आसक्त रहना ही मृत्यु अर्थात् जन्म-मरण का हेतु है। मृत्यु भय और मोक्ष अभय का देने वाला है।

- क्रमशः

"शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"

"सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची

गतांक से आगे -

513	**आर्यसमाज दिलशाद गार्डन**	**51000**
514	आर्यसमाज मानसरोवर पार्क	2100
515	जगदीश प्र. शर्मा, मानसरोवर पार्क	1100
516	आर्यसमाज पंचदीप	11000
517	एस. के. पसरीचा, केशवपुरम्	1100
518	आर्यसमाज एल ब्लाक आनन्द विहार हरि नगर, न.दि.	7000
519	प्रियंका खत्री, जनकपुरी	1200
520	राजकुमार श्रीवास्तव (रांची)	1000
521	सत्यदेव गुप्ता, कृष्ण नगर	1100
522	डॉ. धर्मवीर वर्मा, शिवपुरी	1100
523	रामभज मदान, राजा गार्डन	5001
524	श्रीमती शांता जौली, प. विहार	5000
525	डॉ. सुशील कुमार, शिवपुरी	1100
	आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली द्वारा एकत्र	
526	देवराज डारा	500
527	श्रीमती हर्ष आर्या	500
528	हंस जी	500
529	आनन्द शर्मा	1000
530	श्रीमती सरला अग्रवाल	500
531	रणवीर सिंह डबास	2100
532	स्त्री आर्यसमाज सरस्वती वि.	6500
533	ईश्वर दास	501
534	नितिन दुआ	1000
535	ओम प्रकाश आर्य	1000
536	श्रीमती शर्मिला तनेजा	5000
537	ब्रह्मदेव बतरा	1000
538	श्रीमती शकुन्तला बजाज	1100
539	श्रीमती कृष्ण कुमारी	500
540	श्रीमती उर्मिल गुप्ता	500
541	श्रीमती चन्द्रवती माताजी	500
542	बिशनदास गम्भीर	3100
543	श्रीमती विमला कौशिक	500
544	गुप्तदान	2500
545	विनय भूषण गुप्ता	500
546	कृष्ण चन्द्र गुगलानी	1100
547	श्रीमती ओमवती गुप्ता	1500
548	प्रेम कुमार गुप्ता	1100
549	श्रीमती कान्ता भाटिया	1000
550	चन्द्रभान गुप्ता	2100
551	प्रेम प्रकाश कोहली	500
552	हरभगवान डूंगा	500
553	सुभाष क्वात्रा	1000
554	रूप किशोर	500
555	सुशील प्रतिभानन्द	1000
556	श्रीमती सन्तोष भाटिया	500
557	धर्मपाल वर्मा	500
558	श्रीमती विद्यावती बंसल	500
559	श्रीमती सरस्वती देवी	500
560	श्रीमती मिथलेश गोयल	500
561	तिलकराज	500
562	श्रीमती कान्तापाल	500
563	जगन्नाथ ढींगरा	500
564	सोमनाथ चावला	1000
565	यशपाल गुलाटी	1100
566	श्रीमती विजय कटारिया	500
567	श्रीमती राज मित्तल	500
568	माता कमला स्मारक ट्रस्ट	500
569	श्रीमती मधूमती सूद	5100
570	श्रीमती शशि प्रभा	500
571	रामलाल वर्मा	1000
572	श्रीमती सुषमा गिरधर	1100
573	भीमसेन	500
574	श्री बंसल जी (दीपाली)	500
575	सुनील भल्ला	500
576	ठाकुर दास	500
577	पी. सी. कन्नौजिया	500
578	यशपाल दुआ	500
579	श्रीमती रेखा /नन्दकिशोर गुप्ता	5100
580	**श्रीमती सुषमा गुप्ता, हरि नगर**	**2000**
581	**आर्यसमाज अमर कालोनी**	**25000**
582	श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर (राज.)	10000
583	आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र	11000
584	श्रीमती रजनी गर्ग, कैथल	500
585	धर्मवीर आर्य, कैथल	500

- क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *महामन्त्री*

गुरुकुल कांगड़ी एवं इनसे संबंधित संस्थाओं की संचालक सभा आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के प्रधान बनने के बाद पहली बार गुरुकुल की भूमि पर पधारने पर महाशय धर्मपाल जी एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी का गुरुकुल परिवार की ओर से हार्दिक स्वागत

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में हुई बैठकें

सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग बैठक का दृश्य

लगभग 5 माह बाद पुनः खुलने पर गुरुकुल के आर्यसमाज मन्दिर में हुआ यज्ञ अब प्रति सप्ताह होगा यज्ञ का आयोजन – डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति

यज्ञमान के रूप में बैठे कुपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, सभा प्रधान ब्र. राजसिंह अर्य, धर्मपाल आर्य, आचार्य यशपाल। प्रवचन देते सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी, स्वामी धर्मानन्द जी एवं कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी।

नए पदाधिकारियों के कार्यभार ग्रहण करने के बाद पहली बार गुरुकुल कांगड़ी में पधारने पर गुरुकुल परिवार की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों का स्वागत एवं सम्मान

हिन्दी दिवस : 14 सितम्बर पर विशेष

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन

– डॉ. विवेक आर्य

स्वामी दयानंद ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को असफल होते देखा था और उसके असफल होने का मुख्य कारण भारतीय समाज में एकता की कमी होना था। स्वामी दयानंद ने इस कमी को समाप्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने चिन्तन-मंथन किया कि अगर भारत देश को एक सूत्र में जोड़ना है तो उसकी एक भाषा होना अत्यंत आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अगर कोई भर सकता था तो वह हिंदी भाषा थी। स्वामी दयानंद द्वारा सर्वप्रथम 19 वीं सदी के चौथे चरण में एक राष्ट्र भाषा का प्रश्न उठाया गया और स्वयं गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने इस हेतु आर्यभाषा (हिंदी) को ही इस पद के योग्य बताया। अपने जीवन काल में स्वामीजी ने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ एवं उपदेश आदि हिंदी में देने आरंभ किये जिससे हिंदी भाषा का प्रचार आरंभ हुआ और सबसे बढ़कर जनसाधारण के समझने के लिए हिंदी भाषा में वेदों का भाष्य किया। इससे हिन्दी साहित्य और भाषा को नये उपादान प्रदान किये और प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिंदी भाषा को जानना प्राय: अनिवार्य कर दिया गया।

स्वामीजी इससे पहले संस्कृत में भाषण करते थे इसलिए केवल पठित पंडित वर्ग ही उनके विचारों को समझ पाता था। कालांतर में जब उन्होंने हिंदी भाषा में व्याख्यान प्रारंभ किये तो उससे जन साधारण की उपस्थिति न केवल अधिक हो गई अपितु जनता के लिए उनके प्रवचनों को ग्रहण करना आसान हो गया। स्वामीजी ने अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं को अपने राजकुमारों को हिंदी के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दिलवाने की सलाह दी थी जिससे उनमें देश-भक्ति का सूत्रपात हो सके।

स्वामीजी द्वारा अपने सभी ग्रन्थ हिंदी भाषा में रचे गये जैसे सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेद-भाष्य आदि। इनके सैकड़ों संस्करण छपे और देश में उनके प्रचार से हिंदी भाषा के प्रचार को जो गति मिली उसका पाठक सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

1882 में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में भाषा के निर्धारण को लेकर 'हन्टर कमीशन' के नाम से कोलकता में आयोग का गठन सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में किया गया था। स्वामी दयानंद ने इस कमीशन के समक्ष हिंदी को शिक्षा की भाषा निर्धारित करने के लिए आर्यसमाजों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी भाषा के समर्थन में हंटर आयोग में अपनी सम्मति भेजें। फर्रुखाबाद, देहरादून, मेरठ, कानपुर, लखनऊ आदि आर्यसमाजों को भी इस विषय पर कोलकता पत्र भेजने को कहा था।

हिंदी भाषा भारतीय जनमानस की मानसिक भाषा है इसलिए उसे ही पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में स्वीकृत किया जाये ऐसा समस्त आर्यसमाज द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार के लिए प्रयत्न किया गया था। निश्चित रूप से हिंदी भाषा के प्रचार के लिए यह कार्य ऐतिहासिक महनव का था।

स्वामी जी के देहांत के पश्चात् आर्यसमाज के सदस्यों ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में दिन-रात एक कर दिया। आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा लाखों पुस्तकें हिंदी भाषा में अलग अलग विषयों पर लिखी गई। गद्य, पद्य, काव्य, निबन्ध आदि सभी प्रकार के साहित्य की रचना हिंदी भाषा में हुई। हजारों पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी भाषा में प्रकाशन हुआ। सैंकड़ों पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों के माध्यम से हिंदी भाषा का सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में जैसे मॉरीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार हुआ।

आर्य दर्पण (आर्य समाज का सर्वप्रथम हिंदी पत्र), आर्य भूषण, आर्य समाचार, भारतसुदशा प्रवर्तक, वेद प्रकाश, आर्य पत्र, आर्य समाचार, आर्य विनय, आर्य सिद्धांत, आर्य भगिनी आदि अनेक पत्र तो विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा 20वीं शताब्दी आरम्भ होने से पहले ही निकलने आरम्भ कर दिए थे। 20वीं शताब्दी में इनकी संख्या इतनी थी कि इस लेख में उन्हें समाहित करना संभव नहीं हैं। पाठक इस उल्लेख से समझ सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम हिन्दी होने के कारण हिंदी भाषा के उत्थान में आर्यसमाज का क्या योगदान था।

स्वामी जी के प्रशंसक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिंदी भाषा को देन से साहित्य जगत भलीप्रकार से परिचित है। कालांतर में मुंशी प्रेमचंद, कहानीकार सुदर्शन, आचार्य रामदेव, बनारसी दास चतुर्वेदी, इंद्र विद्यावाचस्पति, सुमित्रानंदन पन्त, मैथिलिशरण गुप्त, पदम् सिंह शर्मा आदि से आरंभ होकर हरिवंश राय बच्चन, विष्णु प्रभाकर, क्षितीश वेदालंकार आदि तक हजारों की संख्या में आर्यसमाज से दीक्षित और अनुप्राणित साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य की रचना की जिससे हिंदी समस्त भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी श्रद्धानंद ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को एक रात में उर्दू से हिंदी में परिवर्तित कर दिया, उन्हें आर्थिक हानि अवश्य उठानी पड़ी पर उनके पत्र की प्रसिद्धि को देखते हुए उसे पढ़ पाने की इच्छा ने अनेकों पाठकों को देवनागरी लिपि सीखने के लिए प्रेरित किया।

पत्रकारिता में नये आयाम आर्यसमाज के सदस्यों के स्थापित किये। पंजाब के सभी प्रसिद्ध अखबार जैसे प्रताप, केसरी, अर्जुन, युगांतर आदि अनेक पत्र हिंदी में ही निकलते थे, जो आर्यसमाजियों ने ही चलाए थे। पंजाब के जन आंचल में उस काल में उर्दू मिश्रित फारसी भाषा बोली जाती थी जिसके प्रचार में उर्दू पत्र जर्मीदार आदि का पूरा सहयोग था।

सैकड़ों गुरुकुलों, डीएवी स्कूल और कॉलेजों में हिंदी भाषा को प्राथमिकता दी गई और इस कार्य के लिए नवीन पाठ्यक्रम की पुस्तकों की रचना हिंदी भाषा के माध्यम से गुरुकुल कांगड़ी एवं लाहौर

– शेष पृष्ठ 7 पर

हिन्दी दिवस से पहले हिन्दी के लिए एक विजय

देश का संविधान चीख-चीखकर कहता है कि हिन्दी भारत की राजभाषा है और कामकाज हिन्दी में होना चाहिए पर यह बात भारत सरकार के विभिन्न विभागों और मन्त्रालयों में बैठे अधिकारी हिन्दी के नाम पर पिछले ६६ वर्षों से खानापूर्ति करते आ रहे हैं और अंग्रेजी का वर्चस्व जस का तस है।

नवी मुम्बई में निवासी एक युवा हिन्दी प्रेमी ने सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अन्तर्गत 'पत्र सूचना कार्यालय' (पसूका), में राजभाषा की घोर उपेक्षा का प्रकरण अपने हाथ लिया, ६ फरवरी २०१३ से निरन्तर उन्होंने पत्र सूचना कार्यालय के अधिकारियों को ई-मेल भेजना आरम्भ किया, कई अनुस्मारक भेजे, पर उत्तर ना आया। राजभाषा अधिनियम के उल्लंघन की शिकायत राजभाषा विभाग को भेजी गई। पर बात आगे नहीं बढ़ी। शिकायत पर राजभाषा विभाग द्वारा कोई कार्यवाही ना होने से हताश होकर अन्तिम हथियार के रूप में शिकायतकर्ता 'सूचना का अधिकार अधिनियम' का सहारा लिया और एक आवेदन लगाया और पसूका से राजभाषा के अनुपालन से जुड़े ढेरों प्रश्न पूछ डाले जिन पर पसूका के केन्द्रीय लोक सूचना अधिकारियों को अपनी गलती का भान हुआ और कार्यालय को १९९२ के उस निर्देश का हवाला दिया गया, जिसमें कहा गया है कि जहाँ-जहाँ हिन्दी-अंग्रेजी का एकसाथ प्रयोग होगा, वहाँ-वहाँ हिन्दी को अंग्रेजी के ऊपर प्राथमिकता दी जाएगी क्योंकि राजभाषा हिन्दी है ना कि अंग्रेजी आरटीआई आवेदन के कई प्रश्नों के ठीक-ठीक उत्तर नहीं दिए, तब आवेदक ने प्रथम अपील लगा दी।

अपील के उत्तर में पसूका ने स्पष्ट किया कि वे पसूका की वेबसाइट की सभी सेवाओं में हिन्दी को प्राथमिकता देंगे एवं हिन्दी की सम्पूर्ण सामग्री को अंग्रेजी की सामग्री के पहले (ऊपर)आगे प्रकाशित किया जाएगा।

और कल का दिन 'इतिहास' बन गया है। कल से पसूका की वेबसाइट http://pib-nic-in/newsite/mainpage-asp पर भारत की राजभाषा को उसका उचित स्थान मिल गया, वेबसाइट पर कई सेवाओं जो पहले केवल अंग्रेजी में थी, अब हिन्दी में उपलब्ध हैं। हिन्दी की विज्ञप्तियों को अंग्रेजी से ऊपर कर दिया गया है, सभी टैब द्विभाषी बना दिए गए हैं. पहले हिन्दी में उन्नत खोज का विकल्प नहीं था, उसे आरम्भ कर दिया गया है, इस तरह दस्तावेज, आलेख आदि को अंग्रेजी सामग्री से नीचे प्रकाशित किया जाता था, उसे भी हिन्दी में ऊपर लगा दिया गया है। शीघ्र ही फोटो का विवरण भी द्विभाषी रूप में उपलब्ध होगा आज तक उसे केवल अंग्रेजी में डाला जा रहा है. पसूका के ट्विटर एवं यू-ट्यूब पर भी नवीन जानकारी द्विभाषी रूप में शुरू की जा रही है।

डॉ. प्रशस्य मित्र शास्त्री को राष्ट्रपति-सम्मान

आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान एवम् संस्कृत भाषा के कवि डॉ॰ प्रशस्यमित्र शास्त्री को इस वर्ष स्वाधीनता दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति-सम्मान प्रदान करने की घोषणा की गई है। पुरस्कार में प्रशस्ति-पत्र एवं शाल के साथ ही पाँच लाख रुपये की नकद राशि प्रदान की जाती है।

डॉ॰ शास्त्री को प्रख्यात साहित्य अकादमी पुरस्कार की उनके कथा संग्रह के लिए इससे पूर्व मिल चुका है। इस वर्ष 2013 में इनकी कृति ''हास्य सुध्युपास्यम्'' अत्यन्त चर्चित रचना है। इनका शोध प्रबंध भी स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य पर तीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आर्यसमाज हनुमान रोड का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली में वेद प्रचार समारोह हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

23 अगस्त से 28 अगस्त तक प्रात 7:30 बजे से ऋग्वेद के मंत्रों से आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ कराया गया वेदपाठ डॉ॰ कर्ण देव शास्त्री जी द्वारा होता रहा। ब्रह्मा जी ने प्रातःकालीन सत्र में रघुमल आर्य स्कूल एवं आर्य पब्लिक स्कूल तथा अन्य विद्यालयों से अन्य छात्र-छात्राओं अध्यापिकाओं एवं समाज के सदस्यों को-यज्ञ के महत्व बच्चों में उत्तम गुणों का समावेश हो ईश्वर भक्ति आदि विषयों पर प्रवचन दिए। सायंकालीन सत्र में 7 से 8 बजे तक आचार्या अमृता शास्त्री जी ने सुमधुर प्रभुभक्ति एवं महर्षि दयानन्द तथा राष्ट्रभक्ति से सम्बन्धित भजनों का रसास्वादन कराया तदुपरान्त आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने अपने 8 बजे से 9 बजे तक तप क्या है? भ्रम क्या है? धर्म क्या है? एवं स्वाध्याय कैसा हो? युवा पीढ़ी में कैसे संस्कार हों? राष्ट्रधर्म क्या है? आदि विषयों पर ओजास्वी प्रवचन दिए। दिनांक 25 अगस्त को सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया गया। यज्ञ पूर्णाहुति श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को हुई। इस अवसर पर दिल्ली एवं नई दिल्ली विभिन्न स्कूलों एवं गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता हुई जिसका विषय था- 'आदर्श एवं अनुकरणीय योगीराज श्री कृष्ण।' प्रतियोगिता में प्रथम कु. तान्या (रघुमल आर्य कन्या उ. मा. विद्यालय) द्वितीय - कु. अदिति बंसल (कुलाची हंसराज माडल स्कूल)एवं तृतीय - कु. प्रियंका (आर्य कन्या गुरुकुल, राजेन्द्र नगर) ने प्राप्त किया।-*अरुणप्रकाश वर्मा, मन्त्री*

आर्यसमाज रोहतास नगर का
47वां श्रावणी महोत्सव

19 सितम्बर से 22 सितम्बर, 2013
यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य ध्रुव कुमार शास्त्री
वेद पाठ : पं. शिव कुमार शास्त्री
भजन : पं. रघुनाथ देव वैदिक भूषण
प्रवचन : आचार्य आशीष कुमार
आचार्य धर्मदेव शास्त्री
समापन समारोह : 22 सितम्बर, 2013
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाएं।
- रामपाल पांचाल, प्रधान

आर्यसमाज राधा पुरी, दिल्ली का
वार्षिकोत्सव समारोह

बुधवार 2 अक्तूबर, 2013
समय : प्रात: 7:30 से 2:30 बजे
यज्ञ ब्रह्मा : पं. अवनीश शास्त्री जी
भजन : श्रीमती सुवर्चा भाटिया जी
प्रवचन : पं. यशपाल शास्त्री जी
डॉ. महेश विद्यालंकार जी
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाएं। *- मन्त्री*

खेद व्यक्त

खेद है कि आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 1 सितम्बर से 8 सितम्बर, 2013 प्रैस गड़बड़ी के कारण प्रकाशित नहीं हो सका, इसके लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है। पाठकों हुई असुविधा के लिए खेद है।- *सम्पादक*

पुण्यतिथि पर वाद-विवाद प्रतियोगिता सम्पन्न

स्वतंत्रता सेनानी श्री हिरिसिंह जी आर्य की छठी पुण्यतिथि पर दिनांक १ सितम्बर २०१३ को स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर की ओर से छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का आयोजन दो वर्गों में किया गया। प्रथम वर्ग में कक्षा ५ से कक्षा ८ तक के विद्यार्थी, विषय - 'तीर्थ यात्राएँ धार्मिकता का प्रमाण है?'और द्वितीय वर्ग में कक्षा ९ से १२ तक के विद्यार्थी, विषय - 'भ्रष्टाचार देश की सबसे बड़ी समस्या है?' दोनों वर्गों में कुल ४२ विद्यार्थियों ने भाग लिया।

- श्री ओम् प्रकाश वर्मा, मंत्री,

'भजन-भास्कर' पुस्तक का विमोचन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं0 चन्द्रभान आर्य (सम्पादक शांतिधर्मी) की पुस्तक 'भजन-भास्कर' का विमोचन जिला वेद प्रचार मण्डल जींद द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में किया गया। ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ है। हरियाणा के इतिहास में यह पहला अवसर है जब किसी आर्य भजनोपदेशक की पुस्तक के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा अनुदान दिया गया है। यह समस्त आर्यजगत् के लिए गर्व का विषय है। पं0 चन्द्रभान आर्य 1951 से भजनोपदेशक के रूप में और 1998 ई0 से शांतिधर्मी के संपादक व प्रकाशक के रूप में आर्यजगत् की सेवा कर रहे हैं।

विमोचन करते हुए श्री जयवीर सिंह आर्य अतिरिक्त उपायुक्त जींद, गुरुकुल कालवा के आचार्य राजेन्द्र, स्वामी सोमानन्द, प्रो0 ओमकुमार आर्य, श्री श्रीचन्द जैन, मा0 कपूर सिंह आर्य व पं0 चन्द्रभान आर्य।

मा. सोमनाथ आर्य पुनः प्रधान बने

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव का वार्षिक अधिवेशन 25 अगस्त 2013 को श्री ओम प्रकाश आर्य एवं श्री बलदेव राज गुगलानी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें मा. सोमनाथ आर्य जी को प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। मतदान गुप्त मतों से हुआ। सम्पूर्ण कार्यकारिण बनाने के अधिकार उन्हें सर्वसम्मति से दिए गए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार क ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

आसाम में नए आर्ष गुरुकुल की स्थापना

आसाम के दिमाहासाऊ जिले में दियुंगबरा के पास तित्तिरिफांग आडिंग ग्राम के पास दयानन्द दुर्ग में राजा गोविन्दचन्द आर्ष गुरुकुलम् की स्थापना पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के करकमलों से १ अगस्त, 2013 को गई।

इस गुरुकुल के लिए स्थानीय लोगों के सहयोग से ५० बीघा भूमि तथा बने बनाए मकान प्रारम्भ में कार्य करना आरम्भ कर दिया है। भारतीय संस्कृत की पद्धति से वैदिक शिक्षा चलाने के लिए स्थानीय जनता की बहुत इच्छा थी। अतः दो दिन के अन्दर ही १०० से अधिक बालक प्रविष्ट हो गए। आगे प्रवेश रोकना पड़ा। इस गुरुकुल का संचालन गुरुकुल आश्रम आमसेना के सुयोग्य स्नातक आचार्य सुरेशचन्द्र जी शास्त्री एवं आचार्य महेन्द्र कुमार शास्त्री कर रहे हैं। आसाम में यह आर्ष गुरुकुल वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्रीय एकता का केन्द्र बनेगा, ऐसी आशा है। - आचार्य कोमल कुमार

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज सी.पी. ब्लाक मौर्या एन्क. पीतमपुरा, दिल्ली

प्रधान : श्री व्रतपाल भगत
मन्त्री : श्री सोहनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री राकेश ठुकराल

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली- 34

प्रधान : श्री नन्दकिशोर गुप्ता
मन्त्री : श्री अरुण आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री नितिन दुआ

आर्यसमाज आनन्द विहार एल ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली

प्रधान : श्री वीरेन्द्र कुमार मल्होत्रा
मन्त्री : श्री महेन्द्र सिंह
कोषाध्यक्ष : श्री नन्द किशोर अरोड़ा

आर्य उप प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद (उ.प्र.)

प्रधान : श्री जयपाल सिंह आर्य
मन्त्री : श्री ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री सत्यवीर चौधरी

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र कूपर (आर्य) का निधन

आर्यसमाज जनकपुरी बी ब्लाक जनकपुरी नई दिल्ली के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं अन्तरंग सदस्य श्री वीरेन्द्र कपूर आर्य का दिनांक 27 अगस्त, 2013 की प्रातःकाल दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण असामयिक निधन हो गया। वे श्री योगेश्वरचन्द्र आर्य जी के घनिष्ठतम मित्र थे। यज्ञ योग एवं वैदिक सिद्धान्तों में उनकी अगाध निष्ठा थी। वे पार्कों में योग प्रशिक्षण भी दिया करते थे। स्व. श्री आर्य जी आर्यसमाज मालवीय नगर के उपमन्त्री भी रहे। उनके निधन से उनके निजी परिवार एवं आर्यसमाज की जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति हो सकना कठिन है। श्रद्धांजलि सभा में सभा की ओर से उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान जी ने पहुंचकर अपने श्रद्धसुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रस्तुत प्रस्ताव पर सब ने अपने-अपने सुझाव रखे तथा इस बात पर सभी लोग एकमत थे कि यह प्रशिक्षण केन्द्र आर्य समाज की आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है तथा इसे जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी आरंभ किया जाये। बैठक में इस प्रस्ताव को स्वीकृति देने के साथ-साथ एक ऐसी समीति के गठन का प्रस्ताव भी सभा मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी की तरफ से प्रस्तुत किया गया कि इस कार्य को आगे बढ़ाने हेतु विस्तृत प्रस्ताव, कार्य विवरण, उपयोगिता, आवश्यकता, संभावित लाभ तथा इस वृहद योजना के संचालन के सम्बन्ध में अपने अन्तिम सुझाव तथा इसके निर्माण के स्थान आदि के सम्बन्ध में अन्तिम प्रस्ताव करने हेतु एक समिति का गठन किया जाये। यह समिति 2 महीनों के अन्दर अन्तिम प्रस्ताव प्रस्तुत करेगी। सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी ने इस निमित्त बनने वाली इस समिति के अध्यक्ष के रूप में महाशय धर्मपाल जी से अनुरोध किया कि वे इसकी अध्यक्षता स्वीकार करे। महाशय धर्मपाल जी ने इस सम्बन्ध में अपनी बात रखते हुये कहा कि मै बहुत लम्बे समय से ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र की बात को विचारता रहा हूं तथा इसके शीघ्र निर्माण हो, इसके लिये सभा अधिकारियों को प्रेरणा भी देता रहा हूं। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता जाहिर की कि आप सब ने इसकी जरूरत को महसूस करते हुए इसके निर्माण के लिये जो प्रस्ताव पास किया गया, यह निश्चय ही आर्य समाज के इतिहास के लिए एक बड़ा कदम होगा। मै इसके लिये आप सभी को शुभकामनायें देता हूं। तथा इसकी बनने वाली प्रस्ताव समिति की अध्यक्षता स्वीकार की। सभा के उपप्रधान श्री सुरेश अग्रवाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने इस कार्य के आरम्भ करने के लिये एक व्यवस्थित राशि देने का आश्वासन दिया। उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी ने पूरी योजना को सुनकर के यह कहा कि यह योजना वास्तव मे अनूठी है तथा आर्य समाज के भविष्य के लिये "**मील का पत्थर**" साबित होगी। उन्होंने इस कार्य के लिए लिए प्रेरणा एवं सुझाव देते हुए अपना आशीर्वाद प्रदान किया। बिहार सभा के मंत्री श्री रामेन्द्र गुप्ता जी, महाराष्ट्र के श्री ब्रह्मुनि जी, श्री दयाराम बसैये, झारखण्ड प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री भारत भूषण त्रिपाठी जी, छत्तीसगढ़ के प्रधान श्री आचार्य अंशु देव, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी, उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री हजारीलाल अग्रवाल जी आदि सभी ने आर्य समाज के ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत करते हुए इसमें हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष — आर्यसमाज बनाएगा .....

धर्मपाल आर्य जी, गुजरात सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी तथा बैठक में मौजूद अन्य सभी प्रान्तों से पधारे पदाधिकारी महानुभावों ने सभा की ओर से लिये गये इस निर्णय की सराहना करने के साथ-साथ इसमे भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री डा. सुरेन्द्र कुमार जी ने गुरुकुल की ओर से इस कार्य में भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। बैठक में विशेष रूप से उपस्थित आर्य नेता महाशय धर्मपाल जी ने भी इस कार्य के प्रति प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि ऐसी आपदा से हज़ारो लोग बेघर तथा बेरोजगार हो गये हैं। यदि हम उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा दे सकें तो यह सबसे बड़ा परोपकार का कार्य होगा। उन्होंने भी अपना आशीर्वाद इस सम्बन्ध में देने का आश्वासन दिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान पूज्य आचार्य बलदेव जी ने इस कार्य को शीघ्र आरंभ करने की आवश्यकता बताई तथा इस हेतु जमीन लेने का कार्य एक मास में पूरा कर लिया जाएगा, ऐसी आशा व्यक्त की। आरंभिक लक्ष्य एक करोड़ रुपए रखा गया।

पृष्ठ 4 का शेष — स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज की ....

आदि स्थानों पर हुई जिनके विषय विज्ञान, गणित, समाज शास्त्र, इतिहास आदि थे। यह एक अलग ही किस्म का हिंदी भाषा में परीक्षण था जिसके वांछनीय परिणाम निकले।

विदेशों में भवानी दयाल संन्यासी, भाई परमानन्द, गंगा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. चिरंजीव भारद्वाज, मेहता जैमिनी, आचार्य रामदेव, पंडित चमूपति आदि ने हिंदी भाषा का प्रवासी भारतीयों में प्रचार किया जिससे वे मातृभूमि से दूर होते हुए भी उसकी संस्कृति, उसकी विचारधारा से न केवल जुड़े रहे अपितु अपनी विदेश में जन्मी सन्तति को भी उससे अवगत करवाते रहे।

आर्यसमाज द्वारा न केवल पंजाब में हिंदी भाषा का प्रचार किया गया अपितु सुदूर दक्षिण भारत में, आसाम, बर्मा आदि तक हिंदी को पहुँचाया गया। न्यायालय में दुष्कर भाषा के स्थान पर सरल हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए भी स्वामी श्रद्धानंद द्वारा प्रयास किये गये थे।

वीर सावरकर हिंदी भाषा को स्वामी दयानंद के देन पर लिखते हैं- "महर्षि दयानंद द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश में जिस हिंदी के दर्शन हमें मिलते हैं, वही हिंदी हमें स्वीकार है। यह सरल, अनावश्यक विदेशी शब्दों से अलिप्त होकर भी अत्यंत अर्थवाहक तथा प्रवाही है। महर्षि दयानंद ही सर्वप्रथम नेता थे, जिन्होंने 'हिंदुस्तान के अखिल हिन्दुओं की राष्ट्र भाषा हिंदी है।' ऐसा उद्घोष व प्रयास किया था।" *(सन्दर्भ-वीर वाणी पृष्ठ 64)*

शहीद भगत सिंह ने पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या के विषय में अपने विचार भाषण के रूप में प्रस्तुत करते हुए हिंदी भाषा के समर्थन में कहा था कि- 'बहुत से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत को एक राष्ट्र, विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुंदर हैं। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक कदम, हमारा हर एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बांधकर सुख वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श कायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरुरी है, ताकि हम एक दूसरे को भली भान्ति समझ सके। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकट्‌टे बैठकर केवल एक-दूसरे का मुँह ही न ताका करें, बल्कि एक-दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें। परन्तु यह पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिंदुस्तान की अपनी भाषा हिंदी में होना चाहिए।

महात्मा गाँधी हिंदी भाषा के कितने बड़े समर्थक थे इसका पता उनके इस कथन से मिलता है जब उन्होंने कहा था की जगदीश चन्द्र बसु आदि विद्वानों के आविष्कार जनता की भाषा में प्रकट किये जाते तो जिस प्रकार तुलसी, रामायण जनता की भाषा में लिखी होने के कारण अपनी चीज बनी हुई हैं, उसी प्रकार से विज्ञान की चर्चायें, विज्ञान के आविष्कार जनता के जीवन को प्रभावित करते।

स्वामी दयानंद और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन निश्चित रूप से अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ तन-मन-धन से सहयोग करें आर्यजन

दानी सज्जन अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276
पंजाब एंड सिंध बैंक, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 1098101000777
केनरा बैंक, IFSC - CNRB 0001098 MICR - 110015025

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

'आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड' - खाता सं. 0649201001 2620
ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, देहरादून, IFSC - ORBC 0100 649

विशेष : जो सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हैं वे अपनी राशि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम सभा के उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल **मो. 9540040339 पर श्री विजय आर्य को सूचित** करके aryasabha@yahoo.com तथा dapsvijayarya@gmail.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 9760195053 पर श्री पृथ्वीराज आर्य को सूचित करें ताकि रसीद जारी की जा सके।

– विनय आर्य, महामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जोधपुर आगमन, प्रवास-स्मृति व आर्यसमाज जोधपुर स्थापना का 130वाँ महोत्सव

'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास' और आर्य समाज जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 27, 28, 29, 30 सितम्बर 2013 को प्रान्तीय स्तर पर एक आर्य सम्मेलन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान्, तपस्वी साधु संन्यासी एवं ऋषि भक्त पधार रहे हैं। सम्मेलन में आर्य समाज की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करते हुए व्याप्त समस्याओं के सटीक समाधान प्रस्तुत किय जाएंगे तथा उन्हें संगठन के और व्यक्तिगत स्तर पर जीवन में धारण करने के लिए कार्य योजना पर काम किया जाएगा। समस्त ऋषि भक्त, सिद्धान्त निष्ठ आर्यों से प्रार्थना है कि आप सम्मेलन में पधार कर आर्य समाज को जीवन देने वाले अभियान में सहयोगी बनें।

- विजय सिंह आर्य, अध्यक्ष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2012 दिल्ली के अवसर पर घोषित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-डरबन (दक्षिण अफ्रीका)

(विश्व वेद सम्मेलन) 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013

आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली** एवं **आर्य प्रतिनिधि सभा दक्षिण अफ्रीका** के तत्त्वावधान में इस वर्ष **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 28, 29, 30 नवम्बर एवं 1 दिसम्बर, 2013 को द. अफ्रीका की राजधानी डरबन में** सम्पन्न होने जा रहा है। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए अनेक देशों के प्रतिनिधि डरबन पहुंच रहे हैं। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजन पहुंचेंगे। सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से भाग ले सकेंगे। **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही द. अफ्रीका आर्य प्रतिनिधि सभा अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगी।** अनेकों आर्यजन डरबन सम्मेलन के इस अवसर पर दक्षिण अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इस कारण उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए डरबन के अतिरिक्त द. अफ्रीका के अन्य स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण शहरों की यात्रा का भी कार्यक्रम बनाया गया है। आवेदन की **अन्तिम तिथि 30 सितम्बर, 2013 तक बढ़ा दी गई है।** अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, यात्रा संयोजक - 09824072509**

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 1 (15 रत्रि 16 दिन)
19 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 19 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहान्सबर्ग, द. अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 20 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 20 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत।

उक्त यात्रा में सनसिटी, जोहान्सबर्ग, केपटाउन, नाइसना तथा डरबन के सभी महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थलों को दिखाया जाएगा। यात्रा की **कुल राशि प्रति व्यक्ति 1,85,000/- रु0 (मुम्बई से)** तथा **1,90,000/- रु. (दिल्ली से)** होगी।

भव्य दक्षिण अफ्रीका यात्रा नं. 2 (7 रत्रि 8 दिन)
27 नवम्बर से 3 दिसम्बर, 2013

प्रस्थान : दिनांक 27 नवम्बर की मध्यरात्रि को मुम्बई/दिल्ली से जोहानसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका हेतु प्रस्थान (मुम्बई से 28 नवम्बर को 02:05 बजे तथा दिल्ली से 28 नवम्बर को 0:45 बजे) **वापसी :** दिनांक 3 दिसम्बर को डरबन से भारत

केवल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने वाले सभी आर्य बन्धुओं को डरबन में 1.5 दिन भ्रमण भी कराया जाएगा। इस यात्रा की **कुल व्यय राशि मुम्बई से 90,000/- रुपये** तथा **दिल्ली से 95,000/- रुपये प्रति व्यक्ति होगी।**

निश्चित की गई राशि में हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय तथा डोमैस्टिक टिकटें, वीजा, बीमा (75 वर्ष तक), सभी स्थानों पर आने-जाने की वाहन व्यवस्था, नाश्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकट, मिनरल वाटर आदि के सभी खर्चे शामिल हैं। केवल बस ड्राइवर को दी जाने वाली टिप सम्मिलित नहीं है।

विस्तृत जानकारी/यात्रा विवरण/आवेदन पत्र हमारी वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलॉड किए जा सकते हैं।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यनेता पद्मश्री वीरेश प्रताप चौधरी ...

ट्रस्ट, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर, कृष्ण दत्त स्वास्थ्य केन्द्र, चन्द्र योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान, चन्द्र कला केन्द्र प्रमुख हैं। वे भारत की सर्वोच्च न्यायालय एवं दिल्ली उच्च न्यायालय में वरिष्ठ अधिवक्ता होने के साथ-साथ अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक संस्थाओं के पदाधिकारी भी रहे।

दयानन्द मठ, दीनानगर की स्थापना के 75 वर्ष पूर्ण होने पर

हीरक जयन्ती समारोह 18-20 अक्तूबर, 2013

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधाकर समारोह को सफल बनाएं

निवेदक : स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष मो. 9478256272

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में

वार्षिक खेल-कूद एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन

नाम प्रतियोगिता	दिन/दिनांक/समय	स्थान	विवरण/विषय/वर्ग	सम्पर्क
भाषण प्रतियोगिता	मंगलवार 17 सितम्बर प्रात: 9 बजे	**आर्य वीर मॉडल स्कूल** बादली, दिल्ली-110042 **नोट :** एक विद्यालय से एक ही प्रतिभागी भाग लेगा। भाषण 3 मिनट का होगा।	वर्ग -1 बाल वर्ग (कक्षा 1 से 5 तक) विषय : आदर्श विद्यार्थी वर्ग -2 कनिष्ठ वर्ग (कक्षा 6 से 8) विषय : महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की राष्ट्र को देन वर्ग - 3 वरिष्ठ वर्ग (कक्षा 9 से 12 तक) विषय : जीवन में संस्कारों का महत्त्व	प्रबन्धक: महेन्द्रपाल मनचन्दा प्रधानाचार्या : उर्मिला मनचन्दा (011-64543030)
एकांकी प्रतियोगिता	गुरुवार 26 सितम्बर प्रात: 9 बजे से	**आर्य मॉडल स्कूल,** आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली-110033	विषय : आर्य महापुरुषों के जीवन के प्रेरक प्रसंग पर आधारित नियम : 1. एक विद्यालय से एक टीम भाग लेगी। 2. वेशभूषा प्रसंग के अनुरुप होना आवश्यक है। 3. प्रतियोगियों की संख्या अधिकतम 15 तक हो। 4. वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जा सकता है	अध्यक्ष : ओम प्रकाश चुघ (9811679226) प्रबन्धक : प्रकाशवीर बत्रा (9818280184) प्रधानाचार्या : प्रोमिला सिंह (8860494523)
खेल-कूद प्रतियोगिताएं	सोमवार 29 सितम्बर से शनिवार 5 अक्तूबर	**एस. एम. आर्य प. स्कूल** पश्चिमी पंजाबी बाग नई दिल्ली-110026	विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं की सूचना अलग से भेजी जाएगी व प्रकाशित होगी। प्रबन्धक : अरविन्द नागपाल (9212130210)	अध्यक्ष : सत्यानन्द आर्य (9313923155) प्रधानाचार्या : अंजलि कोहली (9212700374)

दिल्ली के समस्त शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों एवं विद्यालय के अधिकारियों से निवेदन है कि अपने यहां से अधिकाधिक विद्यार्थियों को इस प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें।

-: निवेदक :-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 9 सितम्बर, 2013 से रविवार 15 सितम्बर, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12/13 सितम्बर, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 11 सितम्बर, 2013

प्रतिष्ठा में,

भारत की आर्थिक स्थिति डावाँडोल : रुपये का डॉलर के मुकाबले जबरदस्त अवमूल्यन

भारत के प्रत्येक निवासी को अपना कर्त्तव्य निभाना होगा

आओं आज से शुरूआत करें : सप्ताह में एक दिन निजी वाहन के स्थान पर सार्वजनिक वाहन का उपयोग करें – आर्य समाज का आह्वान

"देश के निरन्तर बिगड़ते आर्थिक हालात डॉलर के मुकाबले रुपये के मूल्य मे जबरदस्त गिरावट आना देश के भुगतान संतुलन बिगड़ जाना एक भयावह भविष्य अथवा संकेत है। ऐसी स्थिति मे हमें सभी देशवासियों को कुछ–न–कुछ योगदान करना होगा अन्यथा सैनिक गुलामी से आर्थिक गुलामी कही अधिक हानिकर सिद्ध होती है। स्थिति की भयावयता को इस रूप मे भी देखा जा सकता है। सरकार धार्मिक मन्दिरों के खजाने को गिरवी रखने की बात करने लगी है। ऐसी स्थिति में हमे अपना कर्त्तव्य निभाना होगा।" ये विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य श्री बलदेव जी ने देशवासियों के विचारार्थ प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि अगले 6 महीनों के लिये यह संकल्प ले कि सप्ताह मे एक दिन निजी वाहन का प्रयोग न करके सार्वजनिक बस, ट्रेन आदि का सहारा लेंगे।

चीन एवं अन्य देश से आने वाले समान की कम–से–कम खरीदारी करेंगे अथवा ना ही करेंगे।

विवाह समारोह, सार्वजनिक उत्सवों आदि में दिखावा न करते हुए कम–से–कम धन का प्रयोग करेंगे तथा इन उत्सवों मे भोजन आदि के लिए किसी भी विदेशी समान का उपयोग वर्जित रखेंगे।

उन्होंने कहा कि यदि हम सब लोग इन प्रस्तावों पर मिलकर कार्य करते है तो निश्चित रूप से हमे अपना योगदान देश को आर्थिक संकट से बचाने के लिए अवश्य दे पायेंगे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री विनय आर्य जी ने दिल्ली की समस्त जनता से आह्वान किया कि वे अवश्य ही इन बातों का ध्यान रखें। **विशेष : सभी आर्यसमाजों, आर्यसंस्थाओं एवं आर्यजनों से निवेदन है कि इस विचार को अपने साप्ताहिक सत्संग में प्रस्तुत करके प्रत्येक आर्यजन तक पहुचांए तथा पत्रकों के माध्यम से जन–साधारण को प्रेरित करने का कार्य करें।**

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

माता कमला आर्या धर्मार्थ ट्रस्ट के सहयोग से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक विनय

मात्र 125/– रुपये

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्ति स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

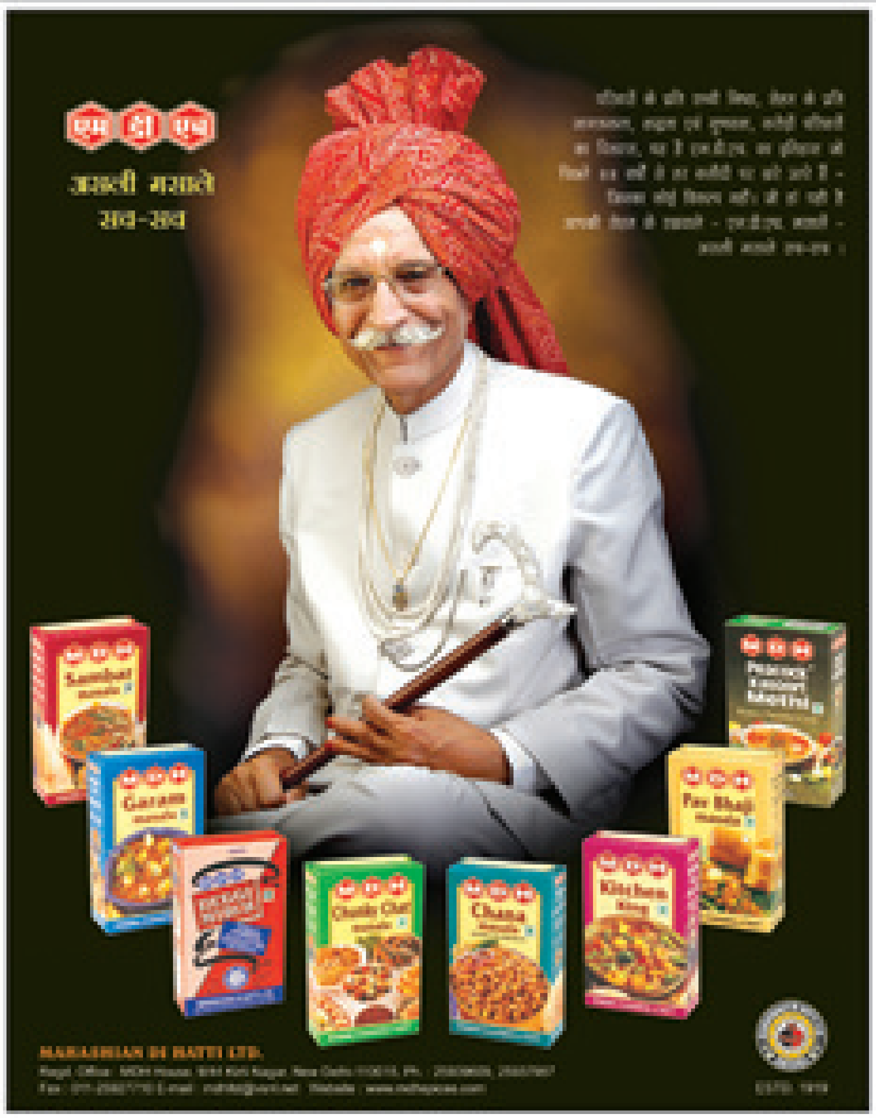

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर